Dr. RANJEET KUMAR
Deptt. of History
H.D. Jain College, Ara.
M.A. Sem. IIIrd
Unit . CC-10 (Indian Historians)

वाणभट्ट :— बाणभट्ट वर्धन वंश के राजा हर्षवर्द्धन के दरबारी कवि थे। इन्होंने हर्षचरित, कादंबरी, चंडीशतक, पार्वती परिणय जैसी रचनाएं लिखी थी। बाणभट्ट 7वीं शताब्दी के संस्कृत कवि और गद्य लेखक थे।

महाकवि बाणभट्ट ने गद्य रचना के क्षेत्र में वही स्थान प्राप्त किया जो कि कालीदास ने काव्य क्षेत्र में। बाणभट्ट का भाव एवं कल्पना पर अद्वितीय अधिकार था। उसके वाक्यों की लम्बाई असाधारण होते हुए भी मनोरंजक तथा उत्कृष्ठ है। बाण की कृतियों में भावों की समृद्धता एवं अभिव्यक्ति की प्रचुरता होने से वे ~~सहि~~ सहृदयों के हृदयों पर प्रभाव डालती है वस्तुत: ठीक ही कहा गया है —
"बाणी बाणी बभूव"!

महाकवि बाणभट्ट वात्स्यायन वंश के वैदिक कर्मकांडी पंडित कुबेर के घर जन्मे। इनके पूर्वज शोण नदी के किनारे प्रीतिकूट नगर में निवास करते थे। इनके पिता चित्रभानु और माता राजदेवी थी। ये समृद्ध परिवार से थे, युवावस्था में त्रिमंडली के साथ स्वयं ही संसार भ्रमण के लिए निकल गए, इन्होंने अनेक देशों की यात्रा कर विशिष्ट ज्ञान प्राप्त किया, जिसका प्रभाव इनकी कृतियों पर स्पष्ट दिखाई पड़ता है।

—